**बांग्ला साहित्य सभा, असम के विजय सम्मेलन में**
**माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चन्द कटारिया का संबोधन**

| दिनांक 29 अक्टूबर 2023, शनिवार | समय : 5.50 PM | स्थान : बोरीपाड़ा, पांडू |
|---|---|---|

- बांग्लादेश के सहायक उच्चायुक्त श्री राहुल अमीन जी
- बांग्ला साहित्य सभा, असम के अध्यक्ष श्री खगेन चंद्र दास जी,
- महासचिव डॉ. प्रशांत चक्रवर्ती जी,
- संरक्षक श्री शिलादित्य देव जी,
- विशेष सलाहकार पद्मश्री अजय दत्ता जी,
- सलाहकार कृष्णान्जन चंदा जी,
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- साहित्य सभा के सम्मानित सदस्यगण,
- मीडिया के हमारे मित्रों,
- उपस्थित देवियों और सज्जनों,

नमस्कार और "शुभ विजय"

बांग्ला साहित्य सभा के "विजय सम्मेलन" में आप सबके बीच उपस्थित होकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। बुराई पर अच्छाई की जीत के प्रतीक के रूप में मनाए जा रहे इस सम्मेलन में मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं बांग्ला साहित्य सभा को धन्यवाद देता हूं। साथ ही इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं।

अभी हाल ही में हमने हर्षोल्लास से दुर्गोत्सव मनाया। दुर्गा पूजा के बाद विजय दशमी पर हमने महिषासुर पर मां दुर्गा की और रावण पर भगवान राम की जीत का जश्न भी मनाया। कहा जाता है कि सकारात्मक और नकारात्मक शक्तियों के बीच युद्ध के बाद शांति की स्थापना होती है।

बंगाली साहित्य सभा द्वारा आयोजित यह विजय सम्मेलन भी धर्म की अधर्म पर, सत्य की असत्य पर जीत का उत्सव मनाने का अवसर है। यह सकारात्मक सोच, दृष्टिकोण और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देता है। यह अच्छी बात है कि यह कार्यक्रम समाज में सद्भाव और शांति का संदेश फैलाने के उद्देश्य से किया जाता है। इसके लिए मैं बंगाली साहित्य सभा को धन्यवाद देता हूं।

मित्रों,

दुर्गा पूजा हिंदूओं का प्रमुख त्योहार है। विशेषकर बंगाली हिन्दु समुदाय के लोग बड़े पैमाने पर इस त्योहार को मनाते हैं। दूर्गोत्सव के दसवें दिन हम विजय दशमी के रूप में मनाते हैं। विजयदशमी बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इससे मिलने वाली शिक्षा को हमें अपने दैनिक जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए, तभी विजयदशमी जैसे त्यौहारों को मनाने का सही मायने में उद्देश्य पूरा हो सकेगा।

विजय दशमी हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। हमारी इस परम्परागत संस्कृति को युवाओं तक पंहुचाना हमारा नैतिक व सामाजिक दायित्व है, ताकि युवा अपनी संस्कृति से रूबरू होकर उसे विश्व में एक नई पहचान देने में अपना सहयोग दे सकें। ऐसे में इस त्योहार को मनाने का महत्व और भी बढ़ गया है।

मुझे खुशी है कि बांग्ला साहित्य सभा विजय सम्मेलन के रूप में इस उत्सव को भव्य रूप से मना रहा है। इस प्रकार के आयोजनों को बिना किसी वैचारिक मतभेद के साथ मनाना चाहिए और सभी लोगों को मिलकर इसमें अपना सामाजिक व नैतिक दायित्व निभाना चाहिए।

मुझे बताया गया है कि 14 जुलाई 2021 को बंगाली साहित्य सभा का गठन किया गया। इतने कम समय में संगठन समाज में अपनी विशिष्ठ पहचान बनाने में सफल हुआ है। इसके लिए संगठन के सदस्य बधाई और सराहना के पात्र हैं।

मुझे खुशी है कि यह संगठन बंगाली साहित्य के विकास के साथ-साथ समाज में सोहार्द, भाईचारा, सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक गतिविधियों में भी अपना सराहनीय योगदान दे रहा है।

मित्रों,

बंगाली साहित्य अन्य क्षेत्रीय साहित्य की तरह साहित्यिक कृतियों से समृद्ध है। इसका एक लंबा और शानदार इतिहास है, जो कई शताब्दियों तक फैला है। इसने विश्व साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बंगाली साहित्य बहुत प्राचीन है। इसकी जड़ें संस्कृत साहित्य से जुड़ी हुई हैं। प्रारंभिक बंगाली रचनाओं में "चर्यापद" जैसी महाकाव्य कविताएँ, रहस्यमय और भक्ति गीतों का संग्रह, और रामायण और महाभारत के विभिन्न रूपांतर शामिल हैं।

19वीं और 20वीं सदी की शुरुआत में बंगाल पुनर्जागरण ने बंगाली साहित्य का पुनरुद्धार किया। विश्व गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर, काजी नजरुल इस्लाम, मिशेल मधुसूदन दत्ता और जिबनानंद दास इस काल के प्रमुख कवि थे। 1913 में रवींद्रनाथ टैगोर को उनके कविता संग्रह "गीतांजलि" के लिए साहित्य में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बंगाली साहित्य अपनी विविधता और सार्वभौमिकता के लिए जाना जाता है। यह बंगाल की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है। विश्व साहित्य में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि बांग्ला साहित्य सभा असम भाषाई अल्पसंख्यक बोर्ड के सहयोग से मेगा अनुवाद परियोजना चला रही है। इसके अलावा असम प्रकाशन विभाग द्वारा काजीरंगा में आयोजित अनुवाद कार्यशाला में बांग्ला साहित्य सभा के छह प्रोफेसरों ने भाग लेकर छह असमिया पुस्तकों का बांग्ला भाषा में अनुवाद किया। निःसंदेह ऐसे कार्यों से बांग्ला साहित्य के साथ-साथ असमिया साहित्य को बढ़ावा मिलेगा और दोनों समुदाय के बीच सद्भाव एवं भाईचारे बढ़ेगा।

मित्रों,

साहित्य को समाज का दर्पण भी माना जाता है। समाज और साहित्य में गहरा संबंध होता है। साहित्य समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। साहित्य की पारदर्शिता समाज के नवनिर्माण में सहायक होती है, जो खामियों को उजागर करने के साथ उनका समाधान भी प्रस्तुत करती है। साहित्य की सार्थकता इसी में है कि वह कितनी सूक्ष्मता और मानवीय संवेदना के साथ सामाजिक अवयवों को उद्घाटित करता है। साहित्य संस्कृति का संरक्षक और भविष्य का पथ-प्रदर्शक है। संस्कृति द्वारा संकलित होकर ही साहित्य 'लोकमंगल' की भावना से समन्वित होता है।

उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी को भारतीय साहित्य के सांस्कृतिक एवं समाज निर्माण की शताब्दी कहा जा सकता है। इस शताब्दी ने स्वतंत्रता के साथ-साथ समाज सुधार को भी संघर्ष का विषय बनाया।

हाल के दिनों में संचार साधनों के प्रसार और सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्यिक अभिवृत्तियाँ समाज के नवनिर्माण में अपना योगदान अधिक सशक्तता से दे रही हैं। हालाँकि बाजारवादी प्रवृत्तियों के कारण साहित्यिक मूल्यों में गिरावट आई है, परंतु अभी भी स्थिति नियंत्रण में है।

आज आवश्यकता है कि सभी वर्ग यह समझें कि साहित्य समाज के मूल्यों का निर्धारक है और उसके मूल तत्त्वों को संरक्षित करना जरूरी है, क्योंकि साहित्य जीवन के सत्य को प्रकट करने वाले विचारों और भावों की सुंदर अभिव्यक्ति है।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस विजय सम्मेलन के अंतर्गत पांच भाषाओं संस्कृत, हिन्दी, असमिया और बंगाली में राज्य स्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह कार्यक्रम हिंदीभाषी, असमिया और बंगाली समुदाय के बीच समन्वय और सद्भाव की डोर को मजबूत करने का अनुपम उद्हारण प्रस्तुत करेगा।

मेरी शुभकामना है कि बांग्ला साहित्य सभा इसी तरह सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यों के माध्यम से समाज में एकता और सद्भावना को बढ़ावा देता रहे और देश के सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विकास में अपना योगदान देता रहे।

मैं मां दुर्गा से प्रार्थना करता हूं कि वह हमें एक संवेदनशील और गुणवत्ता वाले व्यक्ति बनने का आशीर्वाद प्रदान करें ताकि हम एक महान राष्ट्र का निर्माण कर सकें, अपने देश को गौरवान्वित कर सकें और हमारी युवा पीढ़ी के लिए इस दुनिया को और अधिक बेहतर बना सकें।

धन्यवाद !

जय हिन्द !